कौआ और कोयल

एक घने जंगल में एक कौआ अपने माता पिता के साथ रहता था। अब उसकी उम्र विवाह योग्य हो गई थी। माँ बाप बार-बार कहते, “बेटा, अब तेरा घर बसाने का समय है। तेरे लिए कई अच्छे रिश्ते आ रहे हैं।”

कई सुंदर कौइयाँ उसके घर आईं, पर कौए को उनमें से कोई भी पसंद नहीं आई। माता पिता परेशान होकर पूछते, “बीस से ज़्यादा रिश्ते देख लिए, पर तुझे कोई क्यों नहीं भा रहा?” कौआ हर बार चुप रह जाता और कहता, “पापा, इतनी जल्दी क्या है? कर लूँगा शादी। अभी मेरी उम्र ही क्या है।”

असल में, उसके मन में कोई और बसा हुआ था, कोयल। वह हर सुबह काम करने के बजाय उस पेड़ की ओर निकल जाता जहाँ कोयल आकर गाती थी। झाड़ियों में छिपकर उसकी आवाज़ सुनता, और उसकी काली लाल आँखों, भूरे पंखों पर सफ़ेद धब्बों और सुरीले गीत पर मोहित हो जाता। कौआ पूरी तरह कोयल पर फ़िदा था।

लेकिन उसे पता था कि उसका परिवार कभी इस रिश्ते को मंज़ूर नहीं करेगा। कारण साफ़ था कौए का समाज कोयल से नफ़रत करता था। कोयल न अपना घोंसला बनाती, न अपने बच्चों को पालती। उल्टे, अपने अंडे कौए के घोंसले में डाल देती और उनसे परवरिश की उम्मीद करती।

एक दिन पिता ने कहा, “बेटा, क्या सारी ज़िंदगी ऐसे ही अकेले रहोगे? इतनी अच्छी-अच्छी कौइयाँ हैं। शादी करो, अपना घर बसाओ, बच्चे पालो।”
कौए ने हिम्मत जुटाई और पहली बार अपना दिल खोल दिया
“पापा, मुझे कौइयाँ पसंद नहीं। मुझे तो बस कोयल ही चाहिए। मैं किसी और से शादी करूँगा ही नहीं।”

पिता यह सुनकर हैरान रह गए। कुछ देर चुप रहे, फिर बोले, “बेटा, मैंने तुझसे ज़्यादा दुनिया देखी है। ये कोयल किसी की

सगी नहीं होती। अगर तुझसे शादी भी कर ले तो तू सुखी नहीं रह पाएगा। इनके जीवन का मक़सद ज़िम्मेदारी नहीं, सिर्फ़ गाना है। बाकी तेरी मर्ज़ी।"

पर कौआ तो अड़ा हुआ था। पिता की बात उसके एक कान से घुसी और दूसरे से निकल गई।

एक दिन उसने ठान लिया कि अब जाकर कोयल से अपने दिल की बात कहेगा। जैसे ही कोयल पेड़ पर आई और गाने लगी, कौए ने अपने दिल की बात बताई

कोयल ने न हाँ कही, न ना। बस गाती रही।
कौआ उलझन में पड़ गया, मगर उम्मीद नहीं छोड़ी।

दिन बीतते गए। महीने सालों में बदल गए। कौआ हर सुबह उसी पेड़ पर आता और कोयल को सुनता रहा।

फिर एक दिन कोयल किसी और के साथ आई। असल में, उसकी शादी हो चुकी थी।
कौए का दिल टूट गया, मगर उसकी दीवानगी और बढ़ गई। अब वो दूर से बैठकर ही उसे सुनता रहा।

"जब कोयल ने किसी और को अपना लिया, तब कौआ जैसे भीतर से ढह गया। उसके लिए अब सूरज उगना और डूबना बराबर था। उसकी आँखों में भूख नहीं, नींद नहीं सिर्फ़ वही परछाईं थी जो कभी उसकी हुई ही नहीं थी।"

समय बीता। एक दिन पता चला कि कोयल के पति की मृत्यु हो गई है। कौआ बाहर से दुख जताता, लेकिन भीतर ही भीतर ख़ुश हुआ। अब फिर वही दिन लौट आए कोयल गाती और कौआ उसकी धुन में खो जाता।

माता पिता बार-बार कहते, "बेटा, शादी कर ले।"
आख़िरकार थककर पिता ने कहा, "अगर तुझे कोयल से ही शादी करनी है तो कर ले।"

कौआ यह सुनकर सातवें आसमान पर पहुँच गया। पूरी रात सो नहीं पाया। अगली सुबह वह कोयल के पास गया और

शादी का प्रस्ताव रखा। पर कोयल फिर वही न हाँ, न ना।
उसकी चुप्पी ही उसका उत्तर थी।

कौआ फिर भी उम्मीद में जीता रहा।

जब कौए के समाज को पता चला कि वह कोयल से शादी करना चाहता है, उन्होंने उसके परिवार से नाता तोड़ दिया। समाज से बहिष्कार के बाद उसके माँ-बाप को भोजन जुटाने में कठिनाई होने लगी। धीरे-धीरे वे बूढ़े हुए और एक दिन दुनिया छोड़ गए।

अब कौआ बिल्कुल अकेला था।
कोयल ने दूसरी शादी कर ली थी, फिर तीसरी भी। पर अब कौए को फर्क नहीं पड़ता था। उसका दिल तो बस उसे गाते देखने से ही भर जाता।

समय बीतता गया। कम खाने और अकेलेपन की वजह से कौए की सेहत बिगड़ने लगी। फिर भी हर सुबह वह घिसटकर उसी पेड़ तक जाता।

एक दिन उसकी हालत इतनी नाज़ुक हो गई कि जैसे ही कोयल ने पहला सुर निकाला, कौआ की साँस टूट गई।
वह पेड़ से नीचे गिरा और हमेशा के लिए आँखें मूँद लीं।

उसका अंतिम संस्कार करने कोई नहीं आया।
उसकी लाश महीनों वहीं पड़ी रही सड़ गई, गल गई, ज़मीन में मिल गई।

दूर वही पेड़ अब भी खड़ा था। और हर सुबह उसी दिशा से कोयल की आवाज़ आती थी उसी तरह जैसे सालों पहले आती थी।